गृहकार्य का मतलब

हमें अपने चारों तरफ स्थित विद्यालयों में यह देखने को मिल जायेगा। कि हर कक्षा में शिक्षक अपने सप्ताह के छः दिनों में से एक से दो दिन बच्चों को होमवर्क देने में और इतने ही दिन बच्चों का होमवर्क जाँचने में व्यतित करता है। शेष दिनों में यदि कोई अवकाश नहीं आया तो शिक्षक बच्चों को दो दिन ही कुछ नया कार्य करवायेगा। इस नये कार्य की योजना भी जाँचे गये होम वर्क के अनुसार नहीं होती है। ऐसे में जिन बच्चों ने अपना होमवर्क गलत किया है। उनके साथ क्या परेशानी आई। उसे जानने समझने और उसका निदान करने पर कोई काम नहीं किया जाता है। ऊपर से दूसरा नया काम और शुरू करवा दिया जाता है। जब पहला कार्य ही बच्चे ने ठीक से नहीं सीखा तो दूसरा काम कितनी अच्छी तरहा से सीख पायेगा। यह एक सवाल हमारे सामने खड़ा होता है। अभी तो ट्यूशन और कोचिंग भी जोरों से की जा रही है। यहाँ पर भी बच्चे को होमवर्क दिया जाता है। जब बच्चा दिये गये कार्य को ठीक से नहीं करता तो शिक्षक बच्चे की डायरी में नोट डालकर बच्चे की शिकायत कमजोर और काम ना करने वाले विद्यार्थी के रूप में करता है। कई बार तो माता–पिता को बुलाकर ना लाने पर बच्चे को कक्षा में नहीं बैठने दिया जाता है। जब माता–पिता आते हैं तो शिक्षक शिकायतों की एक लम्बी लिस्ट सुनाकर कहता है आपका बच्चा बहुत कमजोर है। यह पढ़ता नहीं है और घर से काम भी नहीं कर के लाता है। आप इस पर ध्यान दो। बच्चे और माता पिता को ऐसा लगता है जैसे बच्चे को पढ़ाने की जिम्मेदारी शिक्षक की ना होकर अभिभावकों की हो।

इस प्रकार के संवाद से ऐसा लगता है। जैसे शिक्षण कार्य की जिम्मेंदारी माता–पिता पर डाली जा रही है। और स्कूल अपनी जिम्मेदारी से बचने का प्रयास कर रहा है। यहाँ सवाल यह भी खड़ा होता है। कि एक बच्चे की पढ़ाई के लिये प्रतिदिन कितने घंटे होने चाहिये? 6 घंटे स्कूल में बिताने के बाद भी उसे होमवर्क, ट्यूशन, ट्यूशन का होमवर्क दिया जाता है। जो कुल मिलाकर 10 घंटे के लगभग होगा। क्या विद्यालय में लागू किया गया पाठ्यक्रम 6 घंटे की अवधि को ध्यान में रखकर नहीं बनाया गया है? यदि ऐसा है तो पाठ्यक्रम निर्माता ट्यूशन को अनिवार्य मान रहे हैं। अगर इस बात को मान लिया जाये तो एक बच्चे का पूरा दिन स्कूल और होमवर्क के कामों मे ही चला जायेगा। ऐसे में बच्चे के पास अपने परिवेश को जानने, समझने, परिवार और समाज से जुड़ने उनकी गतिविधियों में भाग लेने का समय ही नहीं होगा। पर ये सच नहीं है। कोई भी शिक्षा बच्चे को उसके परिवेश, परिवार, समाज और राष्ट्र से अलग करने वाली नहीं हो सकती। शिक्षा लोगों को जोड़ने का काम करती है। तोड़ने का नहीं। समाज और परिवार को जाने बिना हम समाज के विकास में प्रभावी कर्म कैसे कर पायेंगे।

जहाँ तक पाठ्यक्रम की अवधि की बात है। तो उसे स्कूली समय को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। जिसे पूर्ण करवाने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्कूल की होती है। स्कूल के बाद का समय बच्चे के खेलने,

अपने परिवार के लोगों से मिलने, स्कूली ज्ञान को परिवेश से जोड़ने, नये कौशलों को अर्जित करने के लिये होता है। जैसे पेड़ पर चढ़ना, बारिष में भीगना, प्रकृति का आनन्द लेना, पशु पालन को जानना, खेती के अनुभव लेना, साईकिल चलाना, आस–पास के कार्यक्रमों में भाग लेना, नृत्य गायन, पतंग उड़ाना, खाना बनाना सीखना.....। ऐसे तमाम काम जो बच्चे स्कूल के बाहर ही सीख सकते हैं। स्कूल द्वारा दिये गये गृहकार्य के कारण बाधित होते है।

उदय पाठशालाओं में होमवर्क को अनिवार्य रूप से नहीं लिया जाता है। उदय के बच्चे अपना समपूर्ण शिक्षण कार्य शिक्षक की उपस्थिति में ही करते हैं। जिसमें नई अवधारणाओं को जानना, सीखना, समझना और उनका अभ्यास कार्य करना शामिल है। शिक्षक बच्चों को जब कोई काम देता है तो वह काम लोगों से जुड़कर जानकारी जुटाना व आस पास के वातावरण को समझने और अनुभव लेने वाला होता है। स्कूल के बाद का समय उनका अपना समय होता है। इसको वे अपने व अपने परिवार और दोस्तो के साथ अपनी रूचि और जरूरत के अनुसार बिताते है।

गृहकार्य का मतलब